पेपर रिसाइकिल यूनिट

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति को कागज की जरुरत है तथा हम उसका उपयोग करने के पश्चात् उसे फेक देते हैं जिसका कोई उपयोग नही हो पाता है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये संस्था द्वारा 'क्लीन इंडिया परियोजना' के तहत संत अतुलानन्द आवासीय विद्यालय, होलापुर में एक पेपर रिसाइकिल यूनिट लगाई गई है जिसमें बेकार पेपर से नये पेपर तैयार हो सकते हैं जिसका उपयोग लेटर पैड, कार्ड, लिफाफे, फाईल आदि अनेकों कार्यों में होता है इसकी क्षमता A3 साइज के 500 पेपर प्रति दिन की है।

ग्रामीण रिसोर्स सेन्टर

संस्था द्वारा जौनपुर के रामनगर ब्लॉक में 25 ग्रामीण रिसोर्स सेन्टर खोले गये हैं जिसका उद्देश्य ग्रामीणों को शिक्षा उपलब्ध कराना, कम्प्यूटर की शिक्षा प्रदान करना, स्वयं सहायता समूह का निर्माण एवं रोजगार, उन्नत बीज, औषधिय पौधों के उत्पादन एवं विपणन तथा अन्य कृषि से सम्बन्धित समस्याओं का निदान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना है।

नैस्डेप कार्यक्रम

संस्था द्वारा ''राष्ट्रीय संपोषी विकास एवं पर्यावरण जागरुकता कार्यक्रम'' की शुरुआत 2010 मे की गयी है इसमें पर्यावरण वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद्, कृषि वैज्ञानिक, डाक्टर, शोधार्थी सभी जुड़े हैं इससे जुड़ने हेतु 2 रु. का शुल्क रखा गया है। इसमें 22 प्रकार के पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यक्रम शामिल हैं।

स्वच्छता व जल संरक्षण

स्वच्छ भारत, स्वस्थ्य भारत की परिकल्पना को सार्थक करते हुये संस्था द्वारा डी.ए. नयी दिल्ली के सहयोग से ''**जोकनिक परियोजना**'' के अन्तर्गत वाराणसी जिले के 20 विद्यालयों में आधुनिक शौचालयों का निर्माण कराया गया है। इन विद्यालयों में वाश बेसिन व शुद्ध पेय जल हेतु वाटर फिल्टर भी लगाया गया है। इन सभी विद्यालयों में 50-50 क्लीन वाश योद्धा भी बनाये गये है। जिन्हें स्वच्छता व जल संरक्षण का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। इन विद्यालयों में से दो विद्यालयों को माड़ल स्कूल के रुप में विकसित किया जा रहा है। जिसमें बालिकाओं में स्वच्छता व जागरुकता लाने के लिए इलेक्ट्रानिक इन्सिनिलेटर लगाया गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ कूड़ादान, फ्लश सिस्टम लगाया गया है।

वृक्षारोपण विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों पर

महिलाओं के शैक्षणिक सशक्तिकरण हेतु ''तारा अक्षर प्लस कार्यक्रम''

सन्त अतुलानन्द रेजिडेन्शियल एकेडमी में स्थापित पेपर रिसाइकिल मशीन

जोकनिक परियोजना अन्तर्गत 20 विद्यालयों में आधुनिक शौचालयों का निर्माण

Society for Social Action & Research
E-8, Phase-2 Premchand Nagar, Pandeypur,
Varanasi. -221002
Ph.: (0542) 2586012, Mo. : 9415686502
e-mail–ssarsansthan100@gmail.com, Web: www.ssarsansthan.org

Branch Office
E-108, Tara Nagar-Khirani Gate, Jaipur, Pin-302012
Daljeet Nagar, Station Road, Idar, Gujrat. Mo No. 09978757374

Stb : 1996

सोसायटी फॉर सोशल एक्शन एण्ड रिसर्च

सार संस्थान

NASDEAP

पर्यावरण जागरुकता एवं संपोषी विकास कार्यक्रम

पर्यावरण की रक्षा, भविष्य की सुरक्षा।

हमारा प्रयास

सोसायटी फार सोशल एक्शन एण्ड रिसर्च (सार संस्थान) द्वारा सामाजिक हितो के मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बुनियादी पर्यावरण एवं संपोषी विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विविध योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही है।

संस्था द्वारा स्कूली बच्चों एवं कम्युनिटी के माध्यम से समाज के आधारभूत विकास के विभिन्न कार्य किये जा रहे हैं।

सुन्दरीकरण, वृक्षारोपण व स्वास्थ्य

ग्लोबल वार्मिंग एवं क्लाइमेट चेंज विश्व का प्रमुख मुद्दा बन चुका है और इस प्राकृतिक संकट से प्रकृति के रक्षक पेड़ ही रक्षा कर सकते है वे हमें जीवनदायी वायु प्रदान करते है तथा वातावरण को शुद्ध रखते है, वाराणसी एक प्राचीन शहर है यहाँ पर कुछ दशक पूर्व तक जहाँ हजारों कुंड, तालाब, झीलों व वृक्षों से आच्छादित मनोरम वातावरण था, परन्तु अब यह धीरे-धीरे कंक्रीट के जंगलों में बदल चुका है।

संस्था द्वारा इस दिशा में सुधार लाने के उद्देश्य से कई कालोनियों, अस्पतालों, स्टेडियम एवं विभिन्न ग्राम सभाओं को वृक्षो से आच्छादित किया जा चुका है। जिनमें 75 प्रतिशत सुरक्षित हैं। इस वृक्षों में मुख्य रुप से फलदार वृक्ष, पीपल, नीम, अर्जुन, शीशम, बेल, बालमखीरा, ऑवला, अमरुद, पारिजात व अनेक औषधि गुण युक्त है। जिससे वातावरण को स्वच्छ रखा जा सके।

जल प्रबन्धन एवं वाटर हार्वेस्टिंग

जल संसाधनों का विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों में विशेष स्थान है। पृथ्वी की सतह का लगभग तीन चौथाई भाग जल से भरा हुआ है। व्यवहार में विश्व की कुल जलापूर्ति का केवल 0.03 प्रतिशत भाग ही मानव के दैनिक उपयोग के लिए आसानी से उपलब्ध होता है।

संस्था द्वारा वाराणसी, जौनपुर, आजमगढ़ एवं गुजरात के कुछ क्षेत्रों में जल संसाधनों की बचत हेतु ग्रामीण क्षेत्र एवं नगरीय क्षेत्र में अलग-अलग प्रकार से कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में प्रायः सिचाई ट्यूबवेल अथवा नहरों द्वारा पानी को पूरे खेत में भर दिया जाता है। संस्था द्वारा खेतों में टपक सिंचाई लेपा (Low Energy Precisioiin Aplication Springler) प्रणाली के बारे में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। गाँवों में बहने वाली बरसाती या सहायक नदियों पर चेक डैम बनाने का प्रशिक्षण भी संस्था द्वारा दिया जा रहा है। कुछ जिलों में निर्माण कार्य भी प्रस्तावित है। जिसके द्वारा 60 प्रतिशत जल की बचत की जा सकती है।

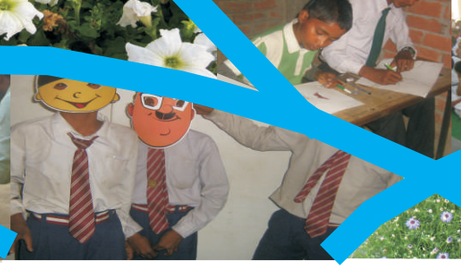

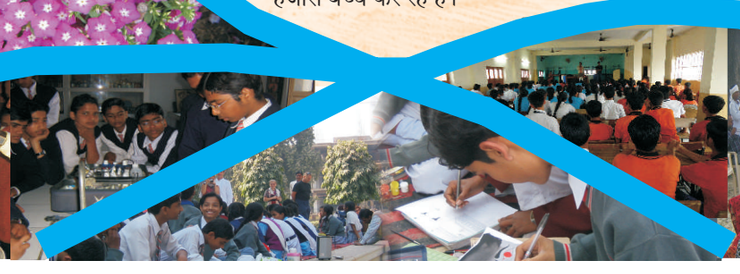

कचरा प्रबन्धन एवं वर्मी कल्चर

प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में कम या ज्यादा कचरा निकालता है इस कचरे को मुख्य रुप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) जैव अपघटकीय कचरा (Bio- degradable waste)

(2) अजैव-अपघटकीय कचरा (Non Bio- degradable waste)

विगत कुछ वर्षों में घरेलू कचरा निपटाने की समस्या पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है क्योंकि यह समस्या विकराल रुप धारण करती जा रही है।

संस्था द्वारा विभिन्न कालोनियों, विद्यालय कैंपस एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसका सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। गॉवों में कृषि के वाई प्रोडक्ट का उपयोग खाद बनाने में करने हेतु संस्था द्वारा नाडेप, वर्मीपिट एवं साधारण पिट का निर्माण एवं प्रशिक्षण का कार्य किया गया है इसमें आजमगढ़, वाराणसी एवं जौनपुर जिले के गॉव व शहरी क्षेत्र हैं।

प्रशिक्षण एवं ट्रेनिंग कार्यक्रम तथा वर्कशाप

असंतुलित जनसंख्या-वृद्धि का पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जब भी जल, थल और वायु का असंतुलित दोहन करता है तो प्रदूषण उत्पन्न होता है।

इन समस्याओं को ध्यान में रखकर संस्था द्वारा जल प्रबन्धन, वर्मीकल्चर, हार्टिकल्चर, सोशल एवं इको फ्रेण्डली उत्पाद, कृषि विकास, औषधीय पौधों तथा अन्य सामाजिक एवं समसामयिक मुद्दों पर प्रत्येक वर्ष लगभग 10 प्रतिशत कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। जिसके उत्साह वर्धक परिणाम सामने आ रहे हैं। जो कि संस्था द्वारा परियोजना के अन्तर्गत वाराणसी के 20 विद्यालयों में शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वाटर फिल्टर लगाया गया हैं जिसका उपयोग हजारों बच्चे कर रहे हैं।